शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2013

जन-कवि दाशरथी

आनद एस. शोधार्थी हिंदी (तुलनात्मक साहित्य)
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

शोध संक्षेप

जनवादी काव्य से तात्पर्य उस व्यवस्था विरोधी काव्य से है जिसमें नब्बे प्रतिशत जनता की कमाई पर दस प्रतिशत लोग मौज करते हैं, जहाँ मेहनत करने वालों को उनके मेहनत का, श्रम का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो खून-पसीना एक कर, भूखें पेट उत्पादन करने वाले श्रमिकों का, शारीरिक एवं मानिसक शोषण करने वाली व्यवस्था का विरोधी काव्य है। वस्तुतः जनवादी कविता जनता की जिंदगी के बीच से उगते हुए उनकी आशाओं, आकांक्षाओं उनके सपनों तथा संघर्षों को वाणी देने वाली होती है। यही जन कवि दाशरथी की कविताओं का केंद्र बिंदु है। प्रस्तुत शोध पत्र में तेलुगु के जन कवि दाशरथी के कविताओं में अभिव्यक्त जनवादिता को रेखांकित किया गया है।

प्रस्तावना

" जरूरत पड़ने पर अस्त्र-सा वज्रायुध-सा

कविता का प्रयोग करता हूँ।

मानवता के हेतु संघर्ष करता हूँ।

संघर्ष के बिना कला नहीं, कविता भी नहीं।"1

दाशरथी तेलुगु के एक ऐसे कवि हैं जिनका व्यक्तित्व और कृतित्व हमें बिलकुल जाना पहचाना सा लगता है। उनका समूचा कृतित्व न केवल तेलुगु प्रांत के जनता का स्वप्न एवं संघर्ष की महान गाथा है बल्कि संपूर्ण भारतीय जनता के स्वप्न एवं संघर्ष की गाथा है। वे उस सामान्य जनता के समर्थ प्रवक्ता हैं जो बरसों से दमित, पीडित और शोषण के चक्र में पिसती आ रही है। उनकी कविताएँ इसी तरह के जन-जीवन की आख्यान है। वैसे तेलुगु में जन कवि कई हुए है, पर सही अर्थों में जन कवि दाशरथी ही है। क्योंकि उनकी तमाम कविताएँ जनता के कंठ में निवास करती हैं और उनके संघर्ष को ताकत देती हैं। जैसे उनकी एक कविता 'टूटेंगे नहीं झुकेंगे नहीं' तेलुगु प्रांत की जनता में आज भी बहू प्रचलित है।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि दाशरथी जनसंघर्ष में अडिग, जनता से गहरा लगाव रखने वाले एवं एक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण की लालसा रखते हैं। इनके काव्य में खासकर तेलंगाना के जनता की अब तक की पूरी परंपरा जीवंत रूप में दिखाई देती है। दाशरथी का न केवल व्यक्तित्व ही अपने समय और परिवेश की समस्याओं, चिंताओं एवं संघर्षों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है बल्कि उनका कृतित्व भी लोक संस्कृति एवं लोक हृदय की गहरी पहचान से निर्मित हुआ है, इसलिए वे जनकवि कहलाते है। जनवादी काव्य से तात्पर्य उस व्यवस्था विरोधी काव्य से है जिसमें नब्बे प्रतिशत जनता की कमाई पर दस प्रतिशत लोग मौज करते हैं, जहाँ मेहनत करने वालों को उनके मेहनत का, श्रम का

उचित मूल्य नहीं मिल पाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो खून-पसीना एक कर, भूखें पेट उत्पादन करने वाले श्रमिकों का, शारीरिक एवं मानिसक शोषण करने वाली व्यवस्था का विरोधी काव्य है। वस्तुतः जनवादी कविता जनता की जिंदगी के बीच से उगते हुए उनकी आशाओं, आकांक्षाओं उनके सपनों तथा संघर्षों को वाणी देने वाली होती है। यही जन कवि

दाशरथी की कविताओं का केंद्र बिंदु है।

व्यक्तित्व

दाशरथी का जन्म 22 जुलाई, 1927 में आंध्र प्रदेश के वरंगल जिले में मानुकोट तहसील के पिन्ना गूडूरू नामक गाँव में एक वैष्णव परिवार में हुआ। इनके पिता दाशरथी वेंकटचार्युलु एवं माता दाशरथी वेंकटम्म है। इनका पूरा नाम दाशरथी कृष्णामाचार्युलु है। जबकि वे दाशरथी के नाम से ही तेलुगु प्रांत में व तेलुगु साहित्य में प्रसिद्ध हैं। 'दाशरथी' इनके परिवार का नाम है। दाशरथी के पिता दाशरथी वेंकटचार्युलु कई भाषाओं के विद्वान थे और माता तेलुगु साहित्य एवं तेलुगु के प्रमुख काव्य प्रबंधों की अच्छी ज्ञाता थीं। वे अपने पिता से संस्कृत एवं तेलुगु की शिक्षा प्राप्त करते हैं तो माता से तेलुगु साहित्य एवं तेलुगु प्रबंध काव्यों का पठन-पाठन। स्कूली शिक्षा से उर्दू, अँग्रेजी एवं फारसी का ज्ञान भी प्राप्त करते हैं। उस समय तेलुगु प्रांत में निजाम का शासन होने के कारण सरकारी भाषा के रूप में उर्दू भाषा की अधिक प्रधानता रही। इसलिए स्कूली शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक उर्दू भाषा में ही शिक्षण कार्य किया जाता था। सरकारी शिक्षण संस्थाओं में निजाम की प्रशंसा करते हुए उर्दू में ही प्रार्थना गीत गया जाता था। जैसे -

"ता आबद खालिखे आलम योरियासत रखे

तुझुको उस्मानो बसद इजाल्त सलामत रखे।"2

दाशरथी बचपन से काव्य प्रबंधों का पठन-पाठन करने के कारण साहित्य के क्षेत्र में उनका अधिकतम रूझान कविता के प्रति रहा। इसलिए वे ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही कविता लिखने लगे। तेलंगाना की जनता पर निजामशाही के अत्याचारों को देखते हुए बाल्यावस्था से निजाम के खिलाफ एवं जनता के समर्थन में खड़े हो गये। जनता के प्रति प्रतिबद्ध होकर विश्व-मानवता की कामना करते हुए अपनी रचनाधर्मिता को आगे बढ़ाते हैं। वे अपनी कविताओं में एक ओर तेलंगाना प्रांत के निजामशाही के खिलाफ विद्रोह करते हैं तो वही दूसरी ओर निजामशाही के द्वारा आतंकित एवं प्रताड़ित जनता के मसीहा बनकर उनकी आशाओं, आकांक्षाओं की वकालत करते हैं। वे स्वयं अपनी कविताओं के संदर्भ में कहते है - "मेरी रचनाओं का मूलाधार निजाम सरकार की निरंकुशता, जनता की दुर्दशा, भारतीय स्वतंत्रता, भारतीय सेना का प्रवेश, निजाम सरकार का पतन आदि रहे हैं।"3 निजामशाही के खिलाफ विद्रोह करना उस समय किसी चुनौतीपूर्ण कार्य से कम नहीं था, फिर भी दाशरथी इस चुनौतीपूर्ण कार्य को स्वीकार करते हुए जनता के समर्थन में, तानाशाही के खिलाफ अपनी आवाज को बुलंद करते हैं। तेलंगाना जनता के आँसुओं को 'अग्निधारा','रूद्रवीणा' नामक कविता संग्रह में संकलित करते हैं। असहाय मानवता का पक्ष लेते

हुए पीडित,शोषित, श्रमिक जनता की आशाओं, आकांक्षाओं एवं अधिकारों को

सशक्त वाणी देते हैं। जैसे 'खेतिहर का ही' नामक कविता में तेलंगाना के श्रमिक वर्गों की प्रशंसा करते हुए जनक्रांति का आवहान करते हैं और तेलंगाना को 'करोड़ों रत्नों की वीणा' की संज्ञा देते हैं -

"अपने प्राणों का उत्सर्ग कर / गहन कानन को गिराकर /

खेतों को उपजाऊ बनाकर / निज श्रमबल से निरंतर /

नवाब के खजाने को /स्वर्ण से भर दिया / उस खेतिहर का ही रे यह

तेलंगाना।"4

दाशरथी की कविताओं पर तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों का प्रभाव ही नहीं रहा बल्कि कई प्रकार के 'वादों' का, 'विचारधाराओं' का प्रभाव भी रहा है। इनकी कविताएँ न केवल मार्क्सवादी चेतना से युक्त है बल्कि गांधीवादी विचारधारा से भी प्रभावित है। वे समाज में प्रचलित विद्रुपताओं, विषमताओं पर आक्रोश व्यक्त करते हुए सत्ताधारी जमींदारों एवं मालिकों पर करारा व्यंग करते हैं। 'हे निर्धन' शीर्षक कविता में मालिकों के प्रति आक्रोश प्रकट करते हुए उन्हें शोषित, पीडित, दरिद्र, निर्धन जनता एवं मानवता के दुश्मन के रूप में देखते हैं -

"तुझे बंदी बना कर / इस जगत ने अंधा बना दिया /

तेरे बच्चों को, घरवाली को / पान-सा चबाने वाले /

मील के म्यागनेट / तेरे गरम-गरम लहू से /

'शवर बात' करने वाले / इस भुवि के मालिक /

वे सब हैं मालिक / मानवता के मुख पर कालिख।"5

मनुष्य-मनुष्य के बीच खड़ी की गयी इन दीवारों को, पीड़ाओं को ढहा देने का आग्रह करते है। ममता एवं मित्रता की ओर बढ़ने का मार्ग दर्शाते हैं। 'पाताल-होम' कविता में इसका चित्रण देखा जा सकता है -

"ढहा दो इन शिथिल देवरों को / भगा दो इन विविध पीड़ाओं को

उतर आने दो ममता के बरगद की जटाओं को

फैल जाने दो शीतल मित्रता की छायाओं को।"6

मनुष्य के बीच खड़ी की गई इन दीवारों को ढ्हा देने के लिए कवि जिस क्रान्ति को आमंत्रण देता है। 'विप्लव' शीर्षक कविता में वे हिंसक क्रान्ति को निरर्थक सिद्ध करते हुए जनता में नव चेतना को विकसित करने की, नवीन अहिंसक विप्लव के बीजों को सब के हृदयों में पनपाने की कामना करते हैं-

"नव चेतना से उल्लसित / युवकों! हे मित्रों! /

हिंसा मत सीखो रे / नाश का पथ छोड़ो रे /

विप्लव का अर्थ मौत नहीं / प्रलय ताण्डव कतई नहीं /

विप्लव का अर्थ बंबों का / विकट अट्टहास नहीं रे /

विप्लव का अर्थ लहू / बहाना नहीं रे! / मुर्दों के ढेरों से /

विप्लव नहीं आता रे! / जगत को जगाओं /

सच्चाई से परिचित काराओं / सब के हृदयों में /

विप्लव के बीज पनपाओं रे।"7

जनवादी शक्तियों को संगठित करते हुए कवि दाशरथी अपनी कविताओं में बड़ी शिद्दत के साथ तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए उनका चित्रण करते हैं। 'काल का फेंका हुआ जाल' शीर्षक कविता में राजनीतिक और आर्थिक धरातल पर पूँजीपतियों के दुर्व्यवहारों की निंदा करते हैं। जिस चंचल धन, वैभव के बल-बूते पर शोषण करने वाले पूँजीपतियों के भ्रम को तोड़ते ही नहीं बल्कि उन्हें अज्ञानता के दुष्परिणामों से भी अवगत कराते हैं -

"काँटे बोकर चमेलियों को ढूँढना मत / अमृत समझ कर रूधिर को

चाटना मत /

चंचल धन की राशी को अरे / अचल समझ भ्रम में पड़ना मत।"8

'आशाद्दसौंध' शीर्षक की कविता में मनुष्य को मनुष्य से अलग करने वाले धन को मिटाने की एवं सुरपुरा का निर्माण करने की आशा जताते हैं-

"मनुष्य से मनुष्य को अलग / करने वाले धन को मिटा पायेंगे/

तो, सारे नर मिल जुल कर / सुरपुर का निर्माण कर सकेंगे।"9

स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले जिस भारत का सुरम्य सपना देखा गया था वह स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात साकार नहीं हो पाया। जनजीवन को लूटने की स्थिति पूंजीवादी व्यवस्था की ज्यों की त्यों बनी रही। धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, खद्दरधारियों द्वारा समाजवाद का नारा लगाकर आम जनता का शोषण छल-बल से किया जाने लगा। एकता को भंग करने वाले सत्तारूढ़ दलों में भ्रष्टाचार दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहा। इन तमाम परिस्थितियों में कवि समस्त भारतीय भाषा-भाषियों के लेखकों को सत्तारूढ़ दलों के खिलाफ कविताएँ लिखने को आमंत्रित करते हैं। इस संदर्भ में 'कविता पुष्पक' शीर्षक कविता की निम्न पंक्तियां देख सकते हैं -

"एकता को भंग करने वाली /राजनीति का विस्मरण कर /

आपस में लड़ने वाले / धर्म का विसर्जन कर /

एकता वर्धक कविता-सौंध की ओर आ जा /

यह कविता-सौंध पुष्पक विमान-सा है /

सबके लिए इसमें जगह है / सभी भाषा-भाषियों आओ रे।"10

दाशरथी की कविता वर्तमान समाज की परिस्थितियों से अत्यधिक चिंतित है पर, वह निराशावादी या पलयनवादी नहीं। वे मनुष्य के उज्ज्वल भविष्य के प्रति आशावादी है। 'वलय'

शीर्षक कविता में मानव-मन को घेरे हुए विश्वलयों (जुगुप्सा, क्रूरता, नीचता) को, प्रलय को जन्म देने वाली और मनुष्य एवं मानवता का विनाश करने वाली बताते हैं। इन

विषैले हृदयों पर टूट पड़ने एवं दंड देने के लिए अपने कंठ से, कलम से अपमानित करने वाले रीतियों को तिरस्कृत करते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। मनुष्य मात्र को मानवीयता की सच्चाईयों से परिचय करने की आशा अभियक्त करते हैं-

"अशांति एवं अराजकता को / सब ओर फैलाने वाले /

ऊन विषैले हृदयों पर / टूट पड़ो रे कंठों से /

ऊन विष वलयों को / दण्ड दो रे अपनी कलमों से।"11

स्वयं कवि 'कोऽहम्' शीर्षक कविता में अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए और दण्ड देने के लिए पिस्तौल की जगह लेखनी से अपने सपनों को पूरा करने की बात करते हैं-

"मैं अपनी जरूरतों के लिए तरसता हूँ।

मैं पिस्तौल हाथ में लेना चाहता हूँ

पर लेखनी से सपने देखता हूँ। "12

'भारत की संतान जाग ऊठी' कविता में कवि स्वतंत्र भारत की रक्षा के लिए सभी भारतीय नागरिकों को आपस में मैत्री पूर्ण भावना 7रखने, भेद-भाव, गाँव-शहर, कूली-किसान, जाति भेद, भाषा भेद आदि को मिटाने की बात करते हैं। देश की रक्षा हेतु हर एक नागरिक

को एक अणु बम बनकर टूट पड़ने एवं स्वतंत्र भारत के विजय गीत गाने की आशा जताते हैं-

"भेद मिटे भाषा अरू प्रांत के / कलह मिटे जाती अरू प्रांत के

स्वप्न बन गये भेद भाव सब / एक बन गये गाँव शहर अब

कूली किसान का ध्येय एक है / सब गाते अब विजय गीत है।"13

इतना ही नहीं बल्कि "विपरीत परिस्थितियों में भी विचलित न होने वाले, खाली हाथ ही शत्रु पर टूट पड़ने में समर्थ भारतवासियों के साहस पर सुखद आश्चर्य प्रकट करते हैं -

'भारत भूमि नेर्पिनदो / प्रजा कोटि नेर्चिंदो

निजं एमिटो गानी / वट्टी चेतितों शत्रुवु

पै दुमिके शक्ति वुन्दी'

(अर्थात- भारत भूमि ने सिखाया या कोटि-कोटि जनता ने, खुद सीख लिया, पता नहीं सच क्या है, परंतु हमारे अंदर खाली हाथ ही शत्रु पर टूट पड़ने का साहस है।)"14

वस्तुतः जनवादी कविता जनता की जिंदगी को संपूर्ण प्रतिनिधित्व तथा समग्रता से प्रस्तुत करती है। वह एक ओर जनता के जीवन की कर्मठता से प्रेरणा लेती है तो दूसरी ओर जनता को शिक्षित कर ऊनके संघर्षों को तथा जीवन को स्वर प्रदान करती है। जनवादी कवि यह भली भाँति जानते हैं कि जब तक देश की समस्त जनता शिक्षित नहीं हो पाती तब तक देश का विकास संभव नहीं हो पाएगा। क्योंकि जनता जब

तक अशिक्षित रहेगी तब तक साम्राज्यवादी, पूंजीवादी एवं सामंती व्यवस्था अंधविश्वासों, कर्मकाण्डों, धर्म-मज़हब, पुनर्जन्म, देवी-देवताओं एवं भाग्य इत्यादि के सहारे आम जनता को दिग्भ्रमित एवं गुमराह करती रहेगी। वह अपनी लूट की व्यवस्था को कायम रखने के लिए एक घृणित, खतरनाक साजिश की रचना करती रहेगी। इसलिए वे जनता को सुशिक्षित करने पर अधिक ज़ोर देते हैं। कवि दाशरथी यह मानते हैं कि देश के सम्मान को बढ़ाने के लिए सबसे पहले अंधेरे में जी रही जनता को सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत करना होगा। निरक्षरता को मिटाकर साक्षरता को बढ़ावा देना होगा। 'मेरे देश का आदेश' शीर्षक कविता में वे शिक्षा के प्रति, देश के प्रति, जनता के प्रति अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं -

"यदि कोई निरक्षर रहे तो / इस जाति का अपमान होगा।

जब सभी पढ़ लिख पायें तो / भारत का मान बढ़ सकेगा।"15

और वे यह भी मानते हैं कि शिक्षित जनता ही साम्राज्यवादी, पूँजीवादी एवं सामंती व्यवस्था के स्थान पर प्रजातंत्र की स्थापना करेगी -

"प्रजातंत्र के पथ पर / साम्यवाद के रथ पर

स्वतंत्रता की कहली / मचायेगी प्रजावली"16

दाशरथी की कविताएँ क्रांतिकारी भावना के साथ ही साथ राष्ट्रीय भावना से भी प्रेरित हैं। 'सैनिक को सलाम', 'मेरे देश का आदेश' और 'भारत की संतान जाग उठी' आदि कविताएँ राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम यह कह सकते है कि दाशरथी अपनी कविताओं में जनता के आँसुओं को, सोई हुई जनता की आत्मा को जगाने का प्रयास करते हैं। शोषक, शासक वर्गों के दमनकारी नीतियों का पर्दाफाश करते हैं। आम आदमी के भयावह जिंदगी और खुरदुरे यथार्थ का चित्रण करते हैं। जनता के संघर्ष को और उनके मुक्तिगामी चेतना के संकल्प को दोहराते हैं। जनता की आशाओं को, आकांक्षाओं को एवं उनके अधिकारों को सशक्त वाणी देते हैं। इस तरह वे जनमानस के जीवन के चितेरे बन 'जनकवि' के अपने उपनाम को सार्थक बना लेते हैं।

सन्दर्भ

1 डॉ. दशरथी, अनु. डॉ. एम. रंगय्या, नदी ने मुझसे कहा, महान्ध्र प्रकाशन हैदराबाद, पृ. प्रस्तावना

2 प्र.सं. मंडली बुद्दाप्रसाद, तेलुगु मणिदीपालु, एमोस्को बुक्स, विजयवाड़ा, पृ.1227

3 आचार्य जी. नागय्य, तेलुगु साहित्य समीक्षा दूसरा खंड, नव्या परिशोधक प्रचुरणलु, तिरूपति, पृ.706

4 डॉ. दशरथी, अनु. डॉ. एम. रंगय्या, नदी ने मुझसे कहा, महान्ध्र प्रकाशन हैदराबाद, पृ. 01

5 वही, पृ. 02

6 वही, पृ. 23

7 वही, पृ. 11

8 वही, पृ. 04

9 वही, पृ. 64

10 वही, पृ. 36

11 वही, पृ. 32

12 वही, पृ. 25

13 वही, पृ. 45

14 सं.डॉ.अमर सिंह वधान, तेलुगु साहित्य और संस्कृति, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली, पृ.184

15 डॉ. दशरथी, अनु. डॉ. एम. रंगय्या, नदी ने मुझसे कहा, महान्ध्र प्रकाशन हैदराबाद, पृ. 31

16 वही, पृ. 31